9

सच्ची कबु-कथा

पाठ-प्रवेश

दूसरों के जीवन में खुशियाँ भरने का सुख अनुपम होता है, यह इस सत्यकथा में बताया गया है। पशु-पक्षी भी संवेदनशील होते हैं। वे भी मानवीय व्यवहारों; जैसे–मिल-बैठकर बातें करना, अपने से शक्तिशाली से भय, उदासीनता जैसे भाव दिखाने आदि में निपुण होते हैं। प्रस्तुत पाठ में 'कबु' नाम का एक कबूतर है, जिसे लेखक स्वतंत्र जीवन का आनंद देना चाहते हैं, लेकिन कबु उनके प्रेम-बंधन की वजह से जा नहीं पा रहा। इससे सिद्ध होता है कि प्रेम का बंधन सुखकर होता है।

पाठ-अभ्यास के उत्तर

बात पाठ की

मुख से

(क) इंदौर में चिड़ियाघर के दक्षिण में कोई दर्जन भर बहुमंज़िली इमारतों की कतार है।।

(ख) लेखक ने मुँडेर पर बैठे कबूतरों को ऐसे किशोर की संज्ञा दी है जो आकार में तो बड़े हो चुके हैं, परंतु उड़ने में कुछ कमज़ोर हैं।

(ग) अचानक बिल्ला के आने पर सारे कबूतर मुँडेर छोड़कर उड़ गए।

(घ) कबूतर को दवा आधा चम्मच पानी में घोलकर ड्रॉपर से उसकी चोंच में पिलाई जाती थी।

(ङ) कबूतर का नाम 'कबु' रखा गया।

कलम से

1. (क) बहुमंज़िली इमारतों के इलाके को नौलक्खा इसलिए कहा जाता है क्योंकि कभी वहाँ आम के इतने पेड़ थे कि एक वर्ष नौ लाख कैरियाँ गिरीं। तब से इसका नाम नौलक्खा हो गया।

(ख) घायल कबूतर को लेखक ने डॉक्टर को दिखाया। एंटीबायोटिक दवा और न्यूरोबियॉन को आधा चम्मच पानी में घोलकर ड्रॉपर से कबूतर की चोंच में डाला। कबूतर के पंखो में भी चोट आई थी। इसके लिए भी डॉक्टर की सलाह लेकर लेखक ने कबूतर की सेवा की। इस प्रकार से लेखक ने कई प्रकार से कबूतर की तीमारदारी की।

(ग) दूसरे दिन कबूतर को डॉक्टर को दिखाने के बाद यह पता चला कि उसे 'लू' लगी है तथा गरदन टेढ़ी होने की भी कोई तकनीकी वजह है।

(घ) लेखक का आत्मीय व्यवहार तथा उनके घर के अनुकूल परिवेश के कारण ही संभवत: कबु ने आज़ाद होने के बावजूद कहीं जाना उचित नहीं समझा।

(ङ) लेखक के शब्दों में विसंगति के स्वर हैं कि देखो, हम ज़मीन पर चलने वाले लोग एक उड़ने वाले पक्षी को उड़ना सिखा रहे हैं। लेखक समय के परिवर्तनशील चक्र की तरफ़ भी इशारा कर रहे हैं।

2. (क) लेखक कबु को बगीचे की जालीदार खिड़की में छोड़ देते थे ताकि वह पेड़-पौधे, आकाश और दूसरे पक्षियों को देख सके।

(ख) कबु को खाने के लिए चावल की चूरी, ज्वार, बाजरा तथा सूखे मटर दिए जाते थे।

(ग) इंटरनेट से कबूतर के भोजन के बारे में सूचना मिली कि उसे सूखे मटर पसंद हैं।

(घ) 'कबु' के कारण मोटी रैना का नाम 'गबू' पड़ा।

(ङ) कबु और गबू एक कमरे में एक साथ इसलिए रह लेते थे क्योंकि 'गबू' बहुत ही शांत और अहिंसक प्रवृत्ति की थी और वह कबु का जरा भी अहित नहीं करती थी।

3. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)